Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 06, June - 2024

DOIs:10.2018/SS/202406011 --:-- Research Paper / Article / Review

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी संवेदना

मुकेश सैनी
शोधार्थी हिन्दी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय
चंुडेला, झुंझुनू, राजस्थान
Email - mks20091987@gmail.com

शोध सार : साहित्य और समाज के ताने-बाने को प्रत्येक युग में उस युग के कर्मठ एवं संवेदनशील कथाकारों ने यथार्थ के धरातल पर तद्ययुगीन परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया है। इसी तरह आधुनिक समकालीन युग में ममता कालिया की रचनाओं को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उनकी कहानियों की नारी पात्र समाज की सडी गली परंपरागत रूढ़ियों को तोड़कर नया बदलाव ला रही है। ममता कालिया आधुनिक पीढ़ी की एक ऐसी कथाकार है जिनकी प्रतिभा का लोहा सभी साहित्यकार मानते हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में भारतीय संदर्भ में नारी संवेदना की दोयम दर्जे की स्थिति को बेहद ही संवेदनशील ढंग से चित्रित किया है । ममता कालिया की कहानी गुस्से और भावुकता से पृथक निर्भय और निसंग तरीके से यथार्थ को हाजिर करती हैं । वस्तुतः उनकी कहानी नारीवादी न होकर नारी के यथार्थ संवेदना की रचनाएं हैं। ममता कालिया द्वारा रचित अनेक कहानियां और उपन्यासों में नारी जीवन की विभिन्न आयामों की गतिविधियों का स्वरूप देखने को मिलता है। किशोरियां, युवतियों और अधेड़ उम्र की नारियों की संवेदनाएं इनकी कहानियों में प्रकट है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्ध रत नारी का व्यक्तित्व बड़ी संवेदना से उपस्थित किया है ।

मूल शब्द: संवेदना, कथा साहित्य, नारी, अनुभूति, सहानुभूति, दयनीय, मानसिकता, समाज, भावनाएं।

1. प्रस्तावना :

संवेदना का कोशगत अर्थ मिलता है -अनुभूति, सहानुभूति ,संवेदना प्रकट करने का भाव। अंग्रेजी शब्दकोश के sensitivity को संवेदना का पर्याय माना गया है जिसका अर्थ निकलता है -महसूस करना ,किसी बात की अनुभूति होना इत्यादि । यदि कोई व्यक्ति या जीव के दुःख को कोई अपना समझ कर उसे महसूस करता है तो उसे हम संवेदनशील कहते हैं। नारी संवेदना शब्द संवेदना के मूल अर्थ को थोड़ा संक्षिप्त कर देता है क्योंकि यहां संवेदना केवल नारी पर ही केंद्रित है। नारी के अंतर्मन की अनुभूतियों के गहनतम रूप को ही नारी संवेदना का मूल आशय माना जा सकता है। प्रकृति ने नारी को पुरुष की तुलना में नैसर्गिक रूप से कई गुण और विशेषताएं अधिक दी है। पुरुष भले ही बल और साहस के क्षेत्र में आगे माना गया है लेकिन संवेदनाओं और भावनाओं की तीव्रता हमेशा नारी में ही अधिक विद्यमान रही है। ममता कालिया ने समाज में व्याप्त नारी की दयनीय स्थिति, खिन्नता, निराशा, हताशा, संवेदनशीलता और पति-पत्नी के बीच बढ़ते तनाव असामंजस्यता को चित्रित किया है।

2. ममता कालिया का कथा साहित्य :

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 को वृदावन, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। ममता कालिया का परिवेश पूरी तरह लिखने पढ़ने से घिरा रहा। उन्होंने अपने लेखन से हिंदी साहित्य को न केवल समद्ध किया बल्कि समाज में स्त्री पुरुष की असमानता व नारी की स्थिति को प्रकाश में लाकर समाज को कटघरे में लिया। रवींद्र कालिया लिखते हैं- वह काफी बेबाक होकर लिखती थी और उसकी भाषा

में एक ताजगी थी। ममता कालिया ने कई विधाओं में साहित्य रचना की है। अब तक ममता कालिया के 10 उपन्यास में 12 कहानी संग्रह आ चुके हैं।

1. कहानी साहित्य

छुटकारा- 1970, एक अदद औरत -1975, सीट नंबर छह -1976, उसका यौवन -1985, प्रतिदिन -1989, जहां अभी जारी है -1997, बोलने वाली औरत -1998, मुखौटा -2003, निर्मोही -2004, थिएटर रोड के कौए -2006, पच्चीस साल की लड़की -2006, काके दी हट्टी- 2010

2. उपन्यास साहित्य

बेघर- 1971, नरक दर नरक -1975 , प्रेम कहानी -1980 , लड़कियां -1987, एक पत्नी के नोट्स- 1995, दौड़ -2000, अंधेरे का ताला -2009, दुक्खम- सुक्खम -2009, कल्चर - वल्चर- 2017

3. कथा साहित्य में नारी संवेदना :

ममता कालिया की राजू कहानी में विधवा बेटी की परिवार में इसलिए संवेदनाएं उपेक्षित होती है क्योंकि वह गरीब व विधवा नारी है। भाई की शादी पर जाने पर बहन व अन्य रिश्तेदारों द्वारा विभिन्न प्रकार की बातें कह कर उसे व बेटे को अपशकुनी कहकर अपमानित किया जाता है। बेघर में पात्र परमजीत की मां का वर्णन है कि बार-बार प्रसव से उसके शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ा है। नारी को संवेदनशील होने के साथ-साथ दायित्वों का निर्वाह करते हुए मातत्व का उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ता है। नारी में दुरूख सहन करने की संवेदना तथा अनुभूतियां तो प्रबल है लेकिन भारतीय नारी अपने विकास एवं अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। यही कारण है कि बेघर में परमजीत की बहन घरेलू कामकाज की अधिकता के कारण वह अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान नहीं रख पाती ।

बातचीत बेकार है कहानी में लेखिका ने एक ऐसी पत्नी को प्रस्तुत किया है जो अपनी यंत्रवत जिंदगी से ऊब गई है। पुरुषों के अहमभाव व स्त्री की संवेदनाओं का ध्यान नहीं रखकर उसको समझाने की प्रवत्ति को लेखिका ने इस कहानी में दिखाया है। नारी का जीवन उसकी संवेदनाएं सिर्फ रसोईघर एवम् प्रसूति गृह तक ही सीमित होकर रह जाती है और कुछ वर्षों बाद उसे लगता है कि पति-पत्नी के बीच की बातचीत बेकार है ।

ममता कालिया की तोहमत कहानी आज के समाज की विकृत मानसिकता का परिचय देती है ।समाज में क्या पुरुष महिला की संवेदनाएं भी नष्ट प्राय हो जाती है, जब लड़कियां कहानी में सुधा और आशा दोनों सहेलियां घूमने जाती हैं और रास्ता भटकती हुई जब जंगल में फंस जाती है तथा वहां एक साधु को असामान्य अवस्था में देखकर डर के मारे भागती हुई कंटीले रास्तों से आती हुई उनके कपड़े फटेहाल हो जाते हैं और जब वे घर पहुंचती है तब घर में सभी उन्हे शंकित दृष्टि से देखते हैं। इस तरह लड़कियों की जरा सी गलती पर लोग उनकी वर्तमान एवम् भावी संवेदना को न समझकर उस पर तोहमत लगाने को तैयार हो जाते हैं।

- एक पत्नी के नोट्स "उपन्यास में कविता बात-बात पर मानसिक हिंसा का शिकार होते हुए दिखाई देती है ।उसने संदीप से प्रेम विवाह किया था लेकिन संदीप उसकी संवेदनाओं को ताक पर रखकर उस पर लांछन लगाता है कि उसके संबंध घर के नौकर के साथ हैं। इस तरह की बातों से कविता मानसिक रूप से पीड़ित रहने लगती है।
- बोलने वाली औरत "कहानी" में लेखिका ने एक परिवार की सास -बहू की संवेदनाओं को व्यक्त किया है इस कहानी की मुख्य पात्र दीपशिखा आज के आधुनिक समाज की उन पढ़ी-लिखी औरतों का सच बयां करती है जो काबिल एवं शिक्षित होने के बावजूद घर की दीवारों में कैद होकर परिवार की जी - हुजूरी करने को मजबूर कर दी जाती है ।
- यह कहानी स्त्री की अभिव्यक्ति और उसके संवेदनाओं पर लगाई जाने वाली पाबंदियों को बखूबी बयां करती है। सास बीजी जो बात-बात पर बहू दीपशिखा को सार्थक बात कहने पर भी टोकती रहती है, उसपर गुस्सा निकालती रहती है ।
- शादी से पहले दीपशिखा को यह नहीं पता था कि प्रेम और विवाह दो अलग-अलग संसार है।एक में भावना और दूसरे में व्यवहार की जरूरत होती है। दुनिया भर में विवाहित औरतों का केवल एक स्वरूप होता है ,उन्हें सहमति प्रधान जीवन जीना होता।
- हालांकि कभी कभार वह निश्चय कर लेती है कि अब वह बिल्कुल नहीं बोलेगी लेकिन वह निश्चय निभ नहीं पाता और कोई न कोई ऐसा प्रसंग उपस्थित हो ही जाता और वह ज्वालामुखी की तरह फट पड़ती और एक बार फिर वह

बदतमीज वह बदजुबान कहलाई जाती और अंत में तो उसकी स्वयं की अभिव्यक्ति और संवेदना मिट ही जाती है जब सार्थक बात कहने पर भी बेटा उसके मुंह पर घूंसा मार देता है और घर भर में किसी ने बेटे को गलत नहीं कहा। इस तरह वह अपने परिवार में उपेक्षा का शिकार होकर अपनी संवेदना और अभिव्यक्ति पर स्वयं ही लगाम लगा लेती है।

- इसी तरह ममता कालिया की आपकी छोटी लड़की कहानी हर भारतीय घर की उस परिवार की कहानी है, जहां माता-पिता द्वारा अपनी ही संतानों के साथ भेदभाव और पक्षपात किया जाता है।
- बाल संवेदना की दृष्टि से बेजोड़ इस कहानी में 13 वर्षीया टुनिया के बाल मन, उसकी मनोदशा और उसकी बाल संवेदना का अद्भुत चित्रण हुआ है।
- अपने ही घर में माता-पिता, बहन इत्यादि के द्वारा उपेक्षित, शोषित ,समुचित मान सम्मान तथा लाड प्यार से वंचित दुनिया के बाल संवेदना को नग्न धरातल पर उघेड़ती यह कहानी पारिवारिक जीवन की सच्चाई को अद्भुत संवेदनात्मक धरातल पर प्रस्तुत करती है।

4. निष्कर्ष:

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी पात्र की संवेदना परिवार, विवाह और प्रेम विवाह में असंतुष्ट है। उनका इस व्यवस्था से मोह भंग हो रहा है। शिक्षित होने के बावजूद अपने पैरों पर खड़ा होने के बाद अपने मन का जीवन साथी ढूंढने के बाद भी नारी को वह स्थान नहीं मिलता है जिसकी उसे तलाश है। नारी की संवेदनाएं बार-बार नष्टप्राय हो जाती है। उसे सहमति प्रधान जीवन जीने और वर्षों से चली आ रही परिपाटी के अनुसार चलने के लिए बाध्य किया जाता है। जबकि वह समानता का जीवन जीना चाहती है। इस प्रकार ममता कालिया के कथा साहित्य में नारियां पारिवारिक ऊब, अजनबी पन, तनाव व अलगाव की स्थिति में अपनी विवशता का चिंतन करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कालिया, ममता, बेघर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 2002
2. कालिया,ममता, लड़कियां चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 1987
3. ममता कालिया, बातचीत बेकार है पृष्ट संख्या-65
4. कालिया, ममता, एक पत्नी के नोट्स किताबघर प्रशासन, प्रथम संस्करण, 1997,नई दिल्ली 110002
5. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियां खंड 1, पृष्ट संख्या 120
6. ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियां खंड 1 पृष्ठ संख्या 278 -79
7. कालिया, ममता, बोलने वाली औरत वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, नई दिल्ली 110002